इस तबाही को समेटें कैसे

– जगमोहन चोपता

कोविड–19 पूरे विश्व में मौत का ताण्डव कर रही है। दुनिया के बहुत से देशों ने अपने आपको घरों में कैद कर लिया है। गाड़ी के पहिये से लेकर कारखानों की चिमनियों से उगलता धुआं तक सबकुछ थम सा गया है। यह एक दो दिन नहीं बल्कि पूरे महीने या उससे भी ज्यादा समय तक हुआ है या हो रहा है। पूरे विश्व में संक्रमित रोगियों की तादाद बढ़ने के साथ–साथ मरने वालों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। रोज शहरों से गांवों की ओर लौटते प्रवासियों की व्यथा गमगीन करने वाली है। उपेक्षा, भय, हताशा और मौत की आशंका ने मानवीयता को तार–तार कर रख दिया है। हालांकि बहुत सी कहानियां मानवीयता को बचाने और बढ़ाने की भी आ रही हैं लेकिन वे इतने बड़े जख्म के आगे बौनी साबित हो रही हैं।

क्या आपदाओं से सिर्फ तबाही होती हैं? मेरा इस पर गहरा यकीन है कि आपदा या महामारी से सिर्फ तबाही नहीं होती। वो मौत के सैलाब के साथ लाती है मनुष्य में जिंदा रहने की जिजिविषा। आप दुनियाभर में महामारी या आपदाओं के इतिहास को खंगालकर देख लीजिए। इन आपदाओं के गहरे शोक के बीच से ही मनुष्य ने नयी राह के गीत रचे हैं। मनुष्य ने बार–बार इनसे अपने आपको और बेहतर करने में लगाया है। दुनिया में जब–जब ऐसी आपदा या महामारी आई हैं तब–तब वहां के समाज ने अपने लिये सुरक्षा और रख–रखाव के नये कीर्तिमान भी रचे हैं।

आज पूरे देश में बड़ी आबादी शहरों से गांवों की ओर वापस आ रही है। ऐसे में इनके रोजगार की ओर ध्यान देने की जरूरत है। सरकारी अस्पतालों के पुर्ननिर्माण की सख़्त जरूरत महसूस होती है। हमारे अस्पतालों को जितना जल्दी हो सके मानव संसाधन और भौतिक संसाधनों से लैस करना होगा। जिनमें इन बीमारियों की जांच से लेकर उनके उपचार तक की पूरी सुविधा हो। इन अस्पतालों तक पहुंचने के लिये पर्याप्त वाहन व सड़कों से इनका जुड़ाव सुनिश्चित किया जाय।

गांव स्तर पर ग्राम समाज को सामुदायिक व सरकार के सहयोग से बहुउद्देश्यीय भवनों के निर्माण की जरूरत है।

फोटोः पुरूषोत्तम ठाकुर

हालांकि कुछ गांवों में सामुदायिक भवन बने हैं लेकिन वे नाकाफी लगते हैं। गांव में गांव की आबादी के हिसाब से ऐसे बहुउद्देश्यीय भवन हों जिनमें महामारी या आपदा के समय लोग रह पायें। इसमें आवास और भोजन की उपलब्धता को लेकर भी प्रयास करने की जरूरत लगती है। ये भवन भूकंपरोधी होने के साथ ही आधुनिक सुविधाओं से लैस होने चाहिए। यदि गांव स्तर पर ऐसे भवनों का निर्माण हो जाता है तो यह कठिन समय के अलावा सामान्य परिस्थितियों में भी उपयोगी साबित होंगे। वर्तमान में सूचना और तकनीकी ने जिस तरह अपने पांव पसारे हैं उससे बहुत से काम आसान हुए हैं। हर गांवों में संचार के साधनों की उपलब्धता हो ऐसी कोशिश की जानी चाहिए। इंटरनेट से हर अस्पताल, किसान और लघु उद्यमों को करने वाले लोगों से जोड़ा जाय। ताकि इनके माध्यम से चिकित्सा, रोजगारोन्मुखी जनजागरूकता और सहायता त्वरित गति से उपलब्ध हो पाये।

ग्राम स्तर से राज्य स्तर पर वापस आ रहे लोगों का डेटा बेस तैयार किया जा सकता है। जिससे यह पता लग पाये कि गांवों में किस तरह के मानव संसाधन की उपलब्धता, कच्चे माल की उपलब्धता या संभावना है। इस मानव संसाधन का गांव में रहते हुये कैसे बेहतर उपयोग हो पाता है इसके लिये शोध, योजना निर्माण और प्रबंधन के लिये तंत्र तैयार करने की जरूरत है।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन चमोली, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)